Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 1074–1078

SOCIAL VALUES IN THE FOLK LITERATURE OF PANDIT JAGANNATH

पं० जगन्नाथ के लोक साहित्य में सामाजिक मूल्य

Navita[1], Sharmila[2]

[1] Research Scholar, Department of Hindi, Guru Jambheshwar University of Science and Technology, Hisar
[2] Assistant Professor, Department of Hindi, Guru Jambheshwar University of Science and Technology, Hisar

ABSTRACT

English: Social values are those principles which govern the behaviour and actions of people in any society. These values are based on social behaviour, mutual respect and create a well-organized society. The major social values include respect for others, respect for mutual views, cooperation, truthfulness, honesty, justice to all, equal behaviour, compassion towards others, sense of performing one's duties and maintaining goodwill in the society. These values spread unity, happiness and peace in the society and make people responsible and sensitive towards each other.

The present research paper describes the social values contained in the folk literature of Pandit Jagannath. Pandit Jagannath was a famous folk poet and singer of Haryana. Social values have a special place in Pandit Jagannath's folk literature which emphasizes the principles of morality, duty, preservation of cultural heritage and equality in the society. The purpose of his folk literature is to propagate the spirit of morality and unity in the society. Values touching various aspects of society have been presented very deeply in Pandit Jagannath's literature. His writings promote the spirit of collectivism, cooperation and brotherhood which is the basis of the strength of any society. His literature teaches harmony and co-existence among different religions, castes and communities in the society. He believes that society can develop only when all people live together in unity and love. Morality and sense of duty have a paramount place in Pandit Jagannath's folk literature. Social values like ideal behavior, truthfulness, honesty and duty fulfillment have been discussed in his works which make a person aware of right and wrong and develop the qualities of a good citizen in the society.

Hindi: सामाजिक मूल्य वे सिद्धांत हैं जो किसी भी समाज में लोगों के व्यवहार और क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं। ये मूल्य सामाजिक व्यवहार, संवेदनशीलता और पारस्परिक सम्मान पर आधारित होते हैं और एक सुव्यवस्थित समाज का निर्माण करते हैं। प्रमुख सामाजिक मूल्यों में दूसरों के प्रति सम्मान रखना, परस्पर विचारों को आदर देना, सहयोग, सच्चाई, ईमानदारी, सबके प्रति न्याय, समानता का व्यवहार, दूसरों के प्रति दया, अपने कर्त्तव्यों को निभाने का भाव और समाज में सद्भावना बनाए रखना शामिल हैं। ये मूल्य समाज में एकता, सुख और शांति का संचार करते हैं और लोगों को एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदार और संवेदनशील बनाते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में पं० जगन्नाथ के लोक साहित्य में निहित सामाजिक मूल्यों का वर्णन किया गया है। पंडित जगन्नाथ हरियाणा के एक प्रसिद्ध लोक कवि और गायक थे। पं० जगन्नाथ के लोक साहित्य में सामाजिक मूल्यों का विशेष स्थान है जो समाज में नैतिकता, कर्त्तव्यपालन, सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और समानता के सिद्धांतों को बल देते हैं। उनके लोक साहित्य का उद्देश्य समाज में नैतिकता और एकता की भावना का प्रचार करना है। पं० जगन्नाथ के साहित्य में समाज के विभिन्न पहलुओं को छूने वाले मूल्य अत्यंत गहनता से प्रस्तुत किए गए हैं। उनके लेखन में सामूहिकता, सहयोग और भाईचारे की भावना को बढ़ावा दिया गया है जो किसी भी समाज की मजबूती का आधार होती है। उनका साहित्य समाज में विभिन्न धर्मों, जातियों और समुदायों के बीच सामंजस्य और सह-अस्तित्व की शिक्षा देता है। उनका मानना है कि समाज तभी विकसित हो सकता है जब उसमें सभी लोग मिलजुल कर एकता और प्रेमपूर्वक रहें। पं० जगन्नाथ के लोक साहित्य में नैतिकता और कर्त्तव्यपालन की भावना का स्थान सर्वोपरि है। उनकी रचनाओं में आदर्श व्यवहार, सत्यता, ईमानदारी और कर्त्तव्यपालन जैसे सामाजिक मूल्यों की चर्चा की गई है जो व्यक्ति को सही और गलत का बोध कराते हैं और समाज में एक अच्छे नागरिक के गुण विकसित करते हैं।

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.2711

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

लोक साहित्य में सामाजिक मूल्यों का अभिप्राय उन आदर्शों और मान्यताओं से है जो एक समाज के नैतिक और सांस्कृतिक ढांचे को संगठित करते हैं। लोक साहित्य का प्रत्येक तत्व, चाहे वह लोकगीत हो, कथा हो या लोकोक्ति, समाज के मूल्य-मान्यताओं को परिलक्षित करता है। ये मूल्य सामूहिकता, सहयोग, ईमानदारी, साहस और न्याय जैसे मानवीय गुणों को बढ़ावा देते हैं जो समाज के नैतिक आचरण को दिशा देते हैं।[1]

लोक साहित्य में सामाजिक मूल्य किस्सों, कहानियों, लोकगीतों और दंतकथाओं के माध्यम से व्यक्त होते हैं। उदाहरण के लिए "पंचतंत्र" की कहानियों में चतुराई, संयम और अनुशासन जैसे गुणों को महत्व दिया गया है जो समाज के प्रत्येक व्यक्ति को एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।[2] लोक गीतों में समाज के रीति-रिवाज, कर्त्तव्य, स्त्री-पुरुष के बीच के सामाजिक संबंध और आपसी सम्मान के महत्त्व को रेखांकित किया जाता है।[3]

लोक साहित्य समाज में सामाजिक असमानता और अन्याय के खिलाफ भी आवाज उठाता है। संत कबीर और तुलसीदास जैसे भक्त कवियों ने जाति और वर्ग भेद के खिलाफ अपने भजनों में संदेश दिए जो कि सामाजिक समानता को बल देते हैं। कबीर ने अपने दोहों में धार्मिक आडंबर और पाखंड की निंदा करते हुए सच्चाई, ईमानदारी और धार्मिक सहिष्णुता के मूल्य प्रस्तुत किए हैं।[4] इस प्रकार लोक साहित्य न केवल मनोरंजन का साधन है; बल्कि समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी संजोता है। यह समाज को नैतिक दृष्टिकोण से मजबूत बनाता है और लोगों को सही और गलत का ज्ञान कराता है।[5]

पं० जगन्नाथ हरियाणा के एक प्रसिद्ध लोक कवि और गायक थे। इन्होंने समाज-सुधार, देशभक्ति एवं ईश्वर-भक्ति के लगभग 700 भजनों की रचना की। इसके अतिरिक्त इन्होंने कृष्ण अवतार, कृष्ण सुदामा, गौकर्ण-धुंधकारी, जलकरण, चंद्रहास, जाहरवीर, महाराजा अग्रसेन, सीता स्वयंवर, शिव-विवाह, अश्वमेध यज्ञ, लव कुश आदि कथाओं को हरियाणवी संगीत में पिरोया है।[6]

पं० जगन्नाथ ने समाज में प्रचलित सामाजिक समस्याओं, कुरीतियों, विसंगतियों, अंधविश्वासों, वृद्ध विवाह प्रथा, मांस-मदिरा के सेवन आदि का यथार्थ चित्रण किया है। इसके साथ-साथ कवि ने 'किसान-मसीहा चौधरी छोटूराम' के माध्यम से ग्रामीण समाज की वास्तविक स्थिति पर भी प्रकाश डाला है। इन सबके अतिरिक्त, कवि ने समाज में शिक्षा और मर्यादा के महत्व को समझा है और इन पर विस्तार से विचार किया है। वे समाज की विभिन्न मान्यताओं के अनुसार भाग्यवाद, पुनर्जन्मवाद, कर्मफलवाद, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक आदि में आस्था रखते हैं जो उनकी रचनाओं में सर्वत्र व्याप्त है।[7]

आपसी फूट, जातिगत विरोध, ऊँच-नीच की भावना, मुकदमेबाजी, ईर्ष्या-द्वेष आदि विघटनकारी तत्त्व भी पं० जगन्नाथ जी की सामाजिक सोच के प्रमुख केन्द्र बिन्दू रहे हैं। मनुष्य के उत्थान और प्रगतिशील समाज के निर्माण में ये ऐसी रुकावटें हैं जिनके कारण व्यक्ति और समाज अपनी स्वाभाविक गति से उन्नति-पथ पर अग्रसर नहीं हो पाता है। ये रुकावटें प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर भी देखने को मिलती है। पं० जगन्नाथ ने अपनी रचनावली में बार-बार मनुष्य को मर्यादा-निर्वाह के लिए सजग एवं सचेत किया है। पं० जगन्नाथ ने लूट–खसूट और उग्रवाद का भी विरोध किया है।[7]

2. पंडित जगन्नाथ के लोक साहित्य में सामाजिक मूल्य के प्रमुख पहलू

पं० जगन्नाथ ने वर्तमान में प्रचलित सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध तथा संस्कृति के सभी पक्षों पर छन्दबद्ध रागनियाँ, भजन, गीत आदि सभी विधाओं में खुलकर लिखा है बिना संकोच झूठ को झूठ और सच को सच लिखा है जहाँ गौरव का वर्णन करना चाहिए वहाँ गौरव का बखान किया और बुराइयों को उजागर करने में भी कोई संकोच नहीं किया।[8]

उनके अनुसार ***"संकट और संघर्षों से, इतनी घबरावै मतना। धीरज, धर्म और मित्र की, हो संकट में पहचान।"***[9] उपरोक्त पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'सीता–बनवास' से ली गई हैं। उपरोक्त पंक्तियाँ जीवन में संकटों और संघर्षों के समय धैर्य, धर्म और मित्रता की महत्ता को समझाने का एक सटीक उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। जब जीवन में कठिनाइयाँ आती हैं तो अधिकांश लोग घबरा जाते हैं और साहस खो बैठते हैं परंतु यह वही समय होता है जब व्यक्ति के असली धैर्य, सच्चे धर्म का पालन और वास्तविक मित्रों की पहचान होती है। इस प्रकार ये पंक्तियाँ व्यक्ति को विपत्ति में घबराने के बजाय धैर्य, धर्म और सच्चे मित्रों का सहारा लेने की प्रेरणा देती हैं। ये संदेश देती हैं कि कठिन समय में ही जीवन के असली मूल्यों का महत्व समझ आता है जो व्यक्ति को मजबूत और समर्थ बनाता है।

"जीवन से भी बहुमूल्य है अपना धर्म बचाना। अबला ऊपर कदे मर्द नै ना चाहिये हाथ उठाना।"[10] उपरोक्त पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'कृष्ण–अवतार' से ली गई हैं। वासुदेव कंस को समझाते हुए कहते हैं कि नारी पर हाथ उठाना अधर्म की निशानी है। उपरोक्त पंक्तियाँ धर्म और नारी सम्मान की रक्षा का महत्व प्रतिपादित करती हैं। इन पंक्तियों का संदेश यह है कि जीवन में सबसे मूल्यवान चीज हमारा धर्म और नैतिकता है। अपने सिद्धांतों और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करना, भले ही इसके लिए कोई भी त्याग करना पड़े, अत्यंत महत्वपूर्ण है। धर्म का अर्थ यहाँ केवल धार्मिक विश्वासों से नहीं; बल्कि सत्य, न्याय और नैतिकता से है जो समाज को सशक्त बनाते हैं। उनके अनुसार सच्चा धर्म व्यक्ति को अच्छाई के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है और उसे जीवन में हर परिस्थिति में सही निर्णय लेने में सहायक होता है। एक सच्चे पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह स्त्री का सम्मान करे और उसकी रक्षा करे। एक समाज तभी आदर्श बन सकता है जब उसमें महिलाओं को सुरक्षा और सम्मान मिले। उनके अनुसार नारी सम्मान की रक्षा समाज का नैतिक दायित्व है और यह कर्त्तव्य सभी पर समान रूप से लागू होता है। एक सभ्य समाज में धर्म का पालन और नारी का सम्मान करना ही सच्चे पुरुषत्व की पहचान है।

"हम बालक थे जब दोनूँ भाई, गऊ चराया करते। भूख लगै जब दूध गऊ का, पीया-खाया करते। सुबह उठ उन गऊवाँ के, नित्य दर्शन पाया करते। आपस में था प्रेम घणां, हम हँस बतलाया करते। सारी बात कह दिये, तेरा दिलदार बुलावै से।" [11] उपरोक्त पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'कृष्ण-सुदामा' से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ भगवान कृष्ण और सुदामा की मित्रता का सजीव चित्रण करती हैं। इस संवाद में सुदामा अपने बचपन की स्मृतियों को संजोए हुए भगवान कृष्ण से अपनी सच्ची मित्रता का वर्णन करते हैं। यहाँ सुदामा बताते हैं कि कैसे वे दोनों बचपन में साथ-साथ गौ-चारण किया करते थे। उनके पास संसाधनों की कमी थी परंतु वे अपने परिश्रम से प्राप्त हर चीज़ में संतुष्ट थे। वे प्रत्येक दिन गऊओं को श्रद्धा से देखते थे। यह संवाद कृष्ण और सुदामा की निश्छल मित्रता का प्रतीक है जिसमें प्रेम, समर्पण, और एक-दूसरे के प्रति अनन्य भक्ति है। इस प्रसंग के माध्यम से यह संदेश मिलता है कि सच्ची मित्रता किसी भौतिक स्थिति या सामाजिक स्थिति पर निर्भर नहीं करती; बल्कि वह निःस्वार्थ भाव और आपसी समझ पर आधारित होती है।

"लेज्या कै दिया बिठा पलंग पै, पूजन का सामान धरा । यार सुदामा का पूजन, खुद कृष्ण जी नै आप करा। रुकमण चंवर ढुलाय रही थी सबके मन में उमंग भरा। अतिथि सत्कार करणिया, भवसागर से पार तिरा। धूप दीप से करी आरती, क्यूँके आज ये मेरै घर आये।" [12] उपरोक्त पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'कृष्ण-सुदामा' से ली गई हैं। उपरोक्त पंक्तियों में भगवान कृष्ण की अपने मित्र सुदामा के प्रति अपार श्रद्धा, प्रेम और सम्मान का अद्भुत चित्रण किया गया है। यह प्रसंग सुदामा के आगमन पर कृष्ण द्वारा किए गए आत्मीय स्वागत और सत्कार को दर्शाता है। स्वयं एक राजा होते हुए भी कृष्ण ने अपने मित्र का स्वागत एक विशेष श्रद्धा के साथ किया। उन्होंने सुदामा को पलंग पर बैठाकर उनका पूजन अपने हाथों से किया जो इस बात का प्रतीक है कि सच्ची मित्रता में सामाजिक स्थिति का कोई महत्व नहीं होता। रुक्मिणी का चंवर ढुलाना यह दर्शाता है कि कृष्ण के परिवार में भी सुदामा का उतना ही सम्मान है जितना कृष्ण के मन में। रुक्मिणी ने भी सुदामा का स्वागत पूरी श्रद्धा और समर्पण से किया। इस दृश्य में पूरे परिवार के मन में सुदामा के प्रति उमंग और हर्ष का वातावरण है जो अतिथि सत्कार की महत्ता को दर्शाता है। यहाँ संदेश दिया गया है कि सच्चे मन से किया गया अतिथि सत्कार व्यक्ति को सांसारिक बंधनों से मुक्त करता है। अतिथि सत्कार, धर्म और मित्रता का एक प्रमुख आदर्श है और कृष्ण इसे अपने जीवन में निभाते हैं। कृष्ण स्वयं अपने मित्र का स्वागत धूप, दीप और आरती से करते हैं जैसे किसी ईश्वर का पूजन कर रहे हों। यह पंक्ति कृष्ण की मित्रता की पवित्रता को दर्शाती है जहाँ वे सुदामा के आगमन को अपने लिए एक विशेष आशीर्वाद मानते हैं। यह पूरा प्रसंग कृष्ण और सुदामा की निश्छल मित्रता को जीवंत करता है जिसमें बिना किसी भेदभाव के प्रेम और सम्मान का भाव है। इन पंक्तियों से यह शिक्षा मिलती है कि सच्चे मित्र का स्वागत सादगी और समर्पण के साथ करना चाहिए चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

"कुल का नाश होये पाछे, कोये धर्म-ईमान रहै कोन्या। अधर्म इसा दबा ले, कुल की प्रतिष्ठा-मान रहे कोन्या। व्यभिचारिणी होवें स्त्री, शुद्ध सन्तान रहे कोन्या। पितर पड़े नरक मैं रोवें कोये पिंड और दान रहै कोन्या।" [13] उपरोक्त पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'गीता–उपदेश' से ली गई हैं। उपरोक्त पंक्तियों में कुल और परिवार की प्रतिष्ठा, धर्म और नैतिकता के महत्व का वर्णन किया गया है। यहाँ यह कहा गया है कि जब कोई परिवार या कुल अपने धर्म, ईमान और मूल्यों से विमुख हो जाता है तब वह धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है। यहाँ अधर्म या गलत कार्यों को किसी भी परिवार की प्रतिष्ठा का ह्रास करने वाला बताया गया है। जब कोई व्यक्ति या परिवार अधर्म के मार्ग पर चलता है तो उसका समाज में मान-सम्मान धीरे-धीरे कम हो जाता है और वह सम्मान खो देता है। यदि परिवार की स्त्री अपने आचरण में शुद्ध नहीं रहती तो उस परिवार की संतान भी सच्चाई और नैतिकता पर नहीं टिक पाती। परिवार की स्त्रियों के आदर्श आचरण का असर पूरे परिवार पर पड़ता है और उनकी शुद्धता परिवार की नींव को मजबूत बनाती है। अगर वंशज अपने कर्त्तव्यों और धार्मिक परंपराओं से विमुख हो जाते हैं तो उनके पूर्वज या पितर भी दुखी हो जाते हैं और उन्हें मोक्ष नहीं मिलता। धर्म के प्रति कर्त्तव्यों की उपेक्षा का असर न केवल वर्तमान पीढ़ी पर; बल्कि उन पितरों पर भी पड़ता है जो अपनी संतानों के कर्त्तव्यों के माध्यम से शांति की अपेक्षा रखते हैं। इस प्रकार यह पूरी पंक्ति धर्म, नैतिकता और पवित्रता का महत्व बताती है। यह संदेश देती है कि एक परिवार का मान-सम्मान और प्रतिष्ठा उसके सदस्यों के आचरण और धर्मपालन पर निर्भर करता है और यदि धर्म और नैतिकता नष्ट हो जाएँ तो वह कुल नष्ट हो जाता है।

"गई जवानी आया बुढ़ापा, आ रहा चौथेपन में। फिर भी क्यूँ सन्तान की ममता, पाल रहा मन में" [14] उपरोक्त पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'सीता–स्वयंवर' से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ जीवन के उस सत्य को उजागर करती हैं जिसमें वृद्धावस्था में भी माता-पिता के मन में अपनी संतान के प्रति अटूट ममता और चिंता बनी रहती है। जीवन के चार मुख्य पड़ावों का वर्णन किया गया है: जवानी का उत्साह, बुढ़ापे की कमजोरी और अंततः चौथेपन की ओर अग्रसर होना। जब व्यक्ति वृद्धावस्था में पहुँचता है तब शारीरिक शक्ति और जीवंतता घटने लगती है और वह अपने जीवन के अंत की ओर बढ़ता है। यह मानवीय स्वभाव का वह पहलू है जो माता-पिता को संतान के सुख-दुःख के प्रति संवेदनशील और चिंतित बनाए रखता है। उम्र चाहे कितनी भी हो जाए, उनका मन हमेशा संतान के भविष्य और कल्याण के लिए धड़कता है। इन पंक्तियों का सार यह है कि माता-पिता के लिए संतान का प्रेम और देखभाल करने की भावना कभी समाप्त नहीं होती। जीवन के हर पड़ाव में चाहे खुद की उम्र कितनी भी हो संतान के प्रति यह ममता बनी रहती है। यह भाव मनुष्य के स्वभाव और ममता की एक विशेष पहचान है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्यार और देखभाल के रूप में आगे बढ़ती है।

"हाल देख कै तेरा जानकी, मैं होग्या बहोत हैरान। आत्महत्या से बढ़कै, ना जग में पाप महान" [15] ये पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'सीता–बनवास' से ली गई हैं। ये रामायण के एक संवेदनशील और महत्वपूर्ण क्षण का वर्णन करती हैं जिसमें भगवान राम अपनी पत्नी सीता के प्रति गहरी चिंता प्रकट करते हैं। यह प्रसंग उस समय का है जब सीता, अयोध्या के नागरिकों के कहने पर आत्महत्या करने के लिए नदी के किनारे जाती हैं।

जब सीता आत्महत्या के विचार में डूबी हुई होती हैं, तब वाल्मीकि जी उनकी स्थिति को समझते हैं और उन्हें समझाने की कोशिश करते हैं। वाल्मीकि जी का संदेश होता है कि आत्महत्या से बढ़कर इस संसार में दूसरा कोई पाप नहीं है। जीवन की समस्याओं और संकटों का सामना करना ही असली साहस है। वे सीता को बताते हैं कि आत्महत्या करने से न केवल उनकी जान जाएगी; बल्कि इससे उनके प्रियजनों पर भी गहरा प्रभाव पड़ेगा। वाल्मीकि जी का यह भी कहना होता है कि जीवन में आए संकट और दु:ख हमें मजबूत बनाते हैं और हमें आत्मविश्वास से काम लेना चाहिए। यह संवाद जीवन के संघर्ष, आत्मसम्मान और आत्म-बलिदान का गहरा अर्थ प्रस्तुत करता है जो हमें अपने जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की प्रेरणा देता है।

"देवापाठी पंडित भी होगे, बकवादी सारे। लौकिक सुख में लीन हुए, बणे मिथ्यावादी सारे। ब्रह्मचारी भी व्ययभिचार के, होगे आदि सारे।" [16] ये पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'अश्वमेध यज्ञ' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में सामाजिक, धार्मिक और नैतिक मूल्यों के ह्रास का गहरा संदेश दिया गया है। ये पंक्तियाँ उस समय की सामाजिक परिस्थितियों पर प्रश्न उठाती हैं जहाँ ज्ञानी पुरुष और पंडित भी भौतिक सुख-साधनों में लिप्त हो गए हैं जिससे सत्य और धर्म का महत्व कम होता जा रहा है। ये पंक्तियाँ हमें चेतावनी देती हैं कि भौतिकता के पीछे भागने से सत्य, धर्म और नैतिकता का क्षय होता है और हमें इन मूल्यों को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

"बुरा किसी का जो नहीं चाहते, वे जग में अपणा नाम कमाते । जो दीन हीन को नहीं सताते, ये है दस्तूर पुराना" [17] ये पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'कृष्ण–अवतार' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में सामाजिक, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का महत्वपूर्ण संदेश दिया गया है। यह विचार उन लोगों की प्रशंसा करता है जो दयालुता और सहानुभूति से जीते हैं और समाज में सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। जो लोग दूसरों के प्रति बुरा सोचने या बुरा करने से बचते हैं वे वास्तव में समाज में सम्मान और नाम कमा लेते हैं। उनका यह विचार और आचरण उन्हें लोगों के बीच एक अच्छे इंसान के रूप में प्रस्तुत करता है। दीन-हीन या गरीब और कमजोर लोगों को सताने की प्रवृत्ति समाज में नकारात्मकता को बढ़ावा देती है। इस प्रकार ये पंक्तियाँ हमें प्रेरित करती है कि हम अपने जीवन में दयालुता को अपनाएँ और समाज में सकारात्मक योगदान दें। ऐसे गुण न केवल हमारे व्यक्तित्व को निखारते हैं; बल्कि समाज को भी एक बेहतर स्थान बनाते हैं।

"नहीं कोये भी धन दुनिया में, सच्चे मित्र केसा। किसै समय में वोहे मित्र, हो जाता हर केसा।" [18] उपरोक्त पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'कृष्ण–सुदामा' से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ मित्रता के सच्चे मूल्य और उसके महत्व को स्पष्ट रूप से व्यक्त करती है। इसमें यह कहा गया है कि सच्चे मित्र की कीमत दुनिया में किसी भी धन से अधिक होती है क्योंकि सच्ची मित्रता कठिनाइयों में सबसे बड़ा सहारा बनती है। जीवन में सच्चे मित्र की उपस्थिति हमें स्थायी खुशी और संतोष प्रदान करती है और ऐसे मित्रों का होना जीवन को एक विशेष अर्थ और दिशा देता है। इसलिए सच्चे मित्र का होना भगवान हरि के समान महत्वपूर्ण है क्योंकि वे जीवन के विभिन्न पहलुओं में हमारे सबसे बड़े सहायक होते हैं और उनका साथ हमेशा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

"ना खून-खून से न्यारा हो है, भाई नै भाई घणां प्यारा हो सै। ना जग में और सहारा हो सै, कोये जाणनियां जाणें" [19] उपरोक्त पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'गोकर्ण' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में भाईचारे, रिश्तों की गहराई और मानवता के संबंध में गहरे विचार व्यक्त किए गए हैं। यह भावनात्मक संदेश भाई-भाई के बीच के अटूट प्रेम और सहारे की शक्ति को उजागर करता है। भाईचारे का संबंध केवल रक्त से नहीं; बल्कि सच्चे प्रेम, समझ और सहयोग से बनता है। जब भाई एक-दूसरे के प्रति सच्चे और समर्पित होते हैं तब उनका रिश्ता और भी मजबूत होता है। इस संसार में भाई के अलावा कोई और ऐसा सहारा नहीं हो सकता जो सच्चे दिल से साथ दे। भाई का साथ, उसकी समझ और प्रेम सबसे बड़ा सहारा होता है। जब हम कठिनाइयों में होते हैं, तब भाई ही वह व्यक्ति होता है जो हमारी मदद के लिए हमेशा खड़ा रहता है। यह भाव व्यक्त करता है कि भाईचारा और सच्ची मित्रता जीवन की सबसे मूल्यवान चीजें हैं। इस प्रकार यह पंक्ति हमें सिखाती है कि रिश्ते केवल रक्त से नहीं बनते; बल्कि सच्चे प्रेम, समर्थन और समर्पण से बनते हैं। भाई-भाई का रिश्ता विशेष और अनमोल होता है और हमें इसे संजोकर रखना चाहिए। इसलिए भाईचारे और रिश्तों की अहमियत को समझते हुए हमें एक-दूसरे का सम्मान और प्रेम करना चाहिए क्योंकि यही हमारे जीवन को सार्थक बनाता है।

"जो कर्म करें और फल नहीं चाहवै. बस त्याग उसी को कहते हैं" [20] ये पंक्तियाँ पं० जगन्नाथ द्वारा रचित सांग 'गोकर्ण' से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ कर्म और त्याग के गहरे अर्थ को उजागर करती है। इनमें यह बताया गया है कि सच्चा त्याग वही है जब कोई व्यक्ति अपने कर्मों का फल प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखता। जब व्यक्ति केवल अपने कर्तव्यों को निभाने में लगा रहता है और अपने कार्यों के परिणाम की चिंता नहीं करता तो वह सच्चा कर्म कर रहा होता है। इसका अर्थ यह है कि ऐसे व्यक्ति के लिए उसके कर्म का उद्देश्य उसका स्वार्थ नहीं है; बल्कि समाज या दूसरों के लाभ के लिए होता है। जब हम अपने कार्यों को निष्काम भाव से करते हैं तब हम सच्चे अर्थ में त्याग का अनुभव करते हैं। यहाँ त्याग का अर्थ है स्वार्थ से मुक्त होकर, केवल सेवा और दायित्व की भावना से कर्म करना। इस विचार का संबंध भारतीय संस्कृति और दर्शन से है जहाँ निष्काम कर्म का महत्व बहुत अधिक है। भगवद गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसी सिद्धांत के अनुसार कर्म करने की सलाह दी थी कि "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" अर्थात् हमें अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए, फल की चिंता नहीं करनी चाहिए। त्याग और कर्म का वास्तविक अर्थ तभी प्रकट होता है जब हम अपने कार्यों को निष्काम भाव से करते हैं जिससे न केवल हमारा आत्म विकास होता है; बल्कि समाज और अन्य लोगों को भी लाभ पहुँचता है।

3. निष्कर्ष

पं० जगन्नाथ के लोक साहित्य में यह संदेश मिलता है कि हर व्यक्ति को अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए और समाज में नैतिकता का उच्च स्थान बनाए रखना चाहिए। उनके लेखन में सांस्कृतिक धरोहर, रीति-रिवाजों, लोकगीतों, लोककथाओं और लोकनृत्यों का संरक्षण किया गया है जिससे नई पीढ़ी अपनी संस्कृति और परंपराओं से जुड़ी रह सके। उनके लोक साहित्य में यह संदेश है कि समाज की प्राचीन परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान और संरक्षण किया जाना चाहिए क्योंकि यह किसी भी प्रदेश की पहचान का हिस्सा हैं। उनके लोक साहित्य में मित्र-धर्म, ईमानदारी और सत्यता की छाप मिलती है जो समाज को नीति अनुरूप आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

पं० जगन्नाथ ने अपने साहित्य में सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों का समर्थन किया है। उनके लेखन में जाति, धर्म, और वर्ग के भेदभाव को नकारते हुए समाज में समानता की बात की गई है। उनके अनुसार समाज में सभी को समान अवसर और अधिकार मिलने चाहिए चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि से हों। उनके साहित्य में हाशिए पर खड़े लोगों के अधिकारों की बात की गई है जिससे समाज में एक समरस और न्यायपूर्ण वातावरण स्थापित हो सके। इस प्रकार पंडित जगन्नाथ के लोक साहित्य में समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास के लिए बहुमूल्य संदेश निहित हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए सामाजिक मूल्य समाज में एकता, न्याय, समानता और सद्भावना की भावना को प्रोत्साहित करते हैं और एक आदर्श समाज की स्थापना में सहायक होते हैं। अपने विभिन्न सांगों के माध्यम से उन्होने त्याग, बलिदान, स्वदेश प्रेम, किसी का बुरा ना करना, कर्म-फल और मर्यादा-निर्वाह जीवन जीने की जो मिशाल पेश की है, वह समाज को एक नई दिशा दिखाती है। उनका साहित्य समाज को नैतिक और सांस्कृतिक रूप से सुदृढ़ करने में एक महत्त्वपूर्ण योगदान देता है और अपनी सांस्कृतिक विरासत और मूल्यों से जुड़े रहने की प्रेरणा देता है।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

1. शर्मा, आर. (2011), लोक साहित्य और सांस्कृतिक मूल्य: संस्कार प्रकाशन जयपुर
2. शास्त्री, पी. (2012), पंचतंत्र की कहानियाँ और सामाजिक मूल्य: ज्ञान मंदिर मुंबई
3. सिंह, ए. (2014), भारतीय विवाह गीतों में सामाजिक संदेश: काव्य प्रकाशन लखनऊ
4. दास, एस. (2015), कबीर के दोहे और सामाजिक चेतना. वाराणसी: भारतीय साहित्य परिषद
5. कुमार, वी. (2013), भारतीय लोक साहित्य में नैतिक मूल्य: साहित्य अकादमी दिल्ली
6. शर्मा, पू. (2016), हरियाणा के लोक गायक : गीतिका प्रकाशन
7. मलिक, मा. (2011), पंडित जगन्नाथ रचनावली सर्जन के विभिन्न अंग: हिंदी साहित्य संस्थान, रोहतक
8. चहल, रा. (2019), पं० जगन्नाथ समाज समाचाना ग्रंथावली : अक्षरधाम प्रकाशन कैथल
9. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 227
10. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 151
11. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 165
12. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 167
13. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 178
14. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 199
15. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 226
16. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 233
17. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 151
18. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 170
19. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 300
20. मलिक, मा. और राठी, ज. (2007), पंडित जगन्नाथ रचनावली: एमडीयू प्रकाशन, पृ० सं० 192